वन्य प्राणी गिद्धः विलुप्त होती प्रजाति पर अनुसंधान कार्य योजना

जबलपुर। विगत दिवस नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर में माननीय डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल, कुलपति जी से डॉ. प्रमोद गोपाल नाजपांडे, प्रान्ताध्यक्ष, नागरिक उपभोक्ता मार्गदर्शक मंच, जबलपुर के साथ डॉ. अवध बिहारी श्रीवास्तव, भूतपूर्व संचालक, वन्य प्राणी फारेंसिक एवं हेल्थ स्कूल, डॉ. राजेश शर्मा, अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, जबलपुर एवं डॉ. एम.एल.व्ही.राव, भूतपूर्व प्राध्यापक पशु औषधि विभाग ने कुलपति कक्ष में सौजन्य भेंट की गई। इस दौरान **''अंर्तराष्ट्रीय गिद्ध दिवसः 8 सितम्बर''** को तारतम्य में गत चार दिवस पूर्व मनाया गया। इसी के विषय पर गहन विचार–विमर्श किया गया, जिसमें जिन बिंदुओं पर अनुशंसाओं की सिफारिश की गई, उनमेंः

- कई कार्यकर्ताओं ने तमिलनाडु के पशुपालन अधिकारियों से प्लूनिकसिन पशु औषधि के उपयोग को रोकने का आग्रह करते हुए कहा है, कि इससे अत्यधिक लुप्तप्राय हो रही आबादी के लिए बड़ा खतरा है।
- उनके अनुसार मवेशियों के शवों में इस दवा का उपयोग सिर्फ 1% होने से गिद्धों के लिए घातक हो जाता है।
- यहाँ यह उल्लेख किया जा सकता है, कि बहुत अधित शोध के बाद डाइक्लोफेनाक पशु औषधि का उपयोग कम हो गया था। परिणामस्वरूप घंटे भर देश की गिद्ध आबादी धीरे–धीरे स्थिर हो रही है। दो दशक पहले डिक्लोफेनाक के इस्तेमाल से गिद्धों की आबादी तेजी से घट रही थी।
- इसके उपरांत निष्कर्ष तौर पर पिछले अनुभव से सबक लेना और माननीय कुलपति जी ने गिद्धों की आबादी में व्यापक गिरावट के लिए **''एक गहन शोध की आवश्यकता''** और तत्संबंध में दिशानिर्देश जारी करने हेतु आश्वस्त किया।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी,
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)